एवरेस्ट विजय के पचास साल 13

इस साल एवरेस्ट विजय के 50 साल पूरे हो गए हैं। वैसे तो इंसानों की पहाड़ों में गहरी रुचि रही है लेकिन पर्वत चोटियों पर चढ़ना और देश का झंडा गाड़ने का सिलसिला कुछ दो सौ साल पुराना है। औपनिवेशिक राज के दौरान भारत में भौगोलिक सर्वेक्षणों की नींव पड़ी, हिमालय क्षेत्र के कई भौगोलिक तथ्यों से लोग वाकिफ हुए। इन्हीं तथ्यों में से एक था माउंट एवरेस्ट का सबसे ऊंची चोटी होना। इस सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना कई लोगों के लिए मिशन बन गया, तो कई देशों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न। पर्वतारोहण के साथ-साथ प्रकृति के साथ बदलते इंसानी रिश्तों के बारे में पढ़िए इस लेख में।

कहां गए वो आम 25

यहां हम बात कर रहे हैं कक्षा - 1 की गणित की नई किताब की जिसे एन.सी.ई.आर.टी. ने पिछले साल प्रकाशित किया है। पहली नज़र में आंखों को सुकून देने वाली इस किताब की समीक्षा पढ़ने पर समझ में आता है कि इसमें बालमनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र के स्तर पर काफी कमियां हैं।

किताब में लगभग हर चित्र में भारतीय परिवेश की चीज़ों की जगह अमरीकी वस्तुएं दिखती हैं। ये अपरिचित चित्र बच्चों के दिमाग पर किस तरह की छवि बनाएंगे यह तो एक प्रमुख सवाल है ही। पर साथ ही यह सवाल भी उठता है कि एन.सी.ई.आर.टी. जैसे संस्थान ने चित्रकारों से भारतीय परिवेश के चित्र बनवाने की बजाए 'रेडीमेड अमेरिकन चित्रों' का सहारा क्यों लिया? और वो भी यह जानते हुए कि हमारे यहां ज्यादातर राज्यों की पाठ्यपुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों की नकल भर होती हैं। इसलिए अब खतरा है कि अगले कुछ सालों में ये सब भी इसी परिपाटी पर चलकर बच्चों के लिए कहीं उतनी ही अपरिचित और बेगानी न हो जाएं।

कुछ विलक्षण तरल 42

आप ठोस, द्रव और गैस के गुणों से भलीभांति वाकिफ हैं। हमारे आसपास कुछ ऐसे तरल भी मौजूद हैं जो हमारी तरल की कसौटियों से कुछ फर्क हैं। मसलन टूथपेस्ट को ही लीजिए। यह एक ऐसा तरल है जो ट्यूब को दबाने पर तो बहता है, लेकिन एक बार ब्रश पर आ जाने के बाद ठोस जैसा व्यवहार करने लगता है। सिर्फ टूथपेस्ट ही क्यों, ऐसे कई और उदाहरण अपने आसपास ही मिल जाते हैं। कुछ विशिष्ट तरल पदार्थों के बारे में पढ़िए इस लेख में।

गुलेलबाज़ लड़का 85

हमारे आसपास ऐसे बच्चे दिखाई दे जाते हैं जिन्हें तितलियों के पंख नोचने, चिड्डों की पूंछ में धागा बांधकर उन्हें उड़ाने या गुलेल से चिड़ियों को निशाना बनाने में मज़ा आता है। हम लोग ऐसे बच्चों को ऐसा करने से रोकते तो हैं ही, साथ ही उन्हें 'राक्षस' कहने से भी बाज़ नहीं आते। लेकिन क्या ऐसे बच्चों का दिल सचमुच किसी की तकलीफ को देखकर नहीं पसीजता होगा?

बाल हृदय में क्या कुछ चलता रहता है, इसे बताने की कोशिश कर रहे हैं, प्रसिद्ध साहित्यकार भीष्म साहनी।

भीष्म साहनी का कुछ दिनों पहले निधन हो गया है। यह कहानी उन्हें याद करने की एक छोटी-सी कोशिश है।

शैक्षिक संदर्भ

अंकः 46

अप्रैल-जुलाई 2003

इस अंक में

आपने लिखा 4

कक्षा में बच्चों से 7
कमलेशचंद्र जोशी

एवरेस्ट विजय के 13
माधव केलकर

कहां गए वो आम? 25
उषा मेनन

प्राणवायु 36
डी. बालासुब्रह्मण्यन

कुछ विलक्षण तरल 42
गौतम आई. मेनन

ज़रा सिर तो खुजलाइए 52

हार्मोन्स 55
जे.बी.एस. हाल्डेन

पाठ्यपुस्तकों को 61

ग्रहण, मिथक और 65
रणजीत गुहा

गुलेलबाज़ लड़का 85
भीष्म साहनी

कुछ नया सोचते 94
सुरेश कुमार शुक्ला

तू डाल डाल तो 96